

रविवार 29 सितंबर, 2019

विषय — वास्तविकता

स्वर्ण पाठ: यशायाह 40 : 8

"घास तो सूख जाती, और फूल मुझा जाता है; परन्तु हमारे परमेश्वर का वचन सदैव अटल रहेगा॥"

उत्तरदायी अध्ययन: नीतिवचन 30 : 5

यशायाह 55: 6-11

- 5 ईश्वर का एक एक वचन ताया हुआ है; वह अपने शरणागतों की ढाल ठहरा है।
6 जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो, जब तक वह निकट है तब तक उसे पुकारो;
7 दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच विचार छोड़कर यहोवा ही की ओर फिरे, वह उस पर
दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा।
8 क्योंकि यहोवा कहता है, मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं है, न तुम्हारी गति और मेरी गति
एक सी है।
9 क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है॥
10 जिस प्रकार से वर्षा और हिम आकाश से गिरते हैं और वहां यों ही लौट नहीं जाते, वरन भूमि पर पड़कर
उपज उपजाते हैं जिस से बोनने वाले को बीज और खाने वाले को रोटी मिलती है,
11 उसी प्रकार से मेरा वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा,
परन्तु, जो मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिये मैं ने उसको भेजा है उसे वह सफल
करेगा॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यूहन्ना 1 : 1, 3-14

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 1 आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।
3 सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।
4 उस में जीवन था; और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी।
5 और ज्योति अन्धकार में चमकती है; और अन्धकार ने उसे ग्रहण न किया।
6 एक मनुष्य परमेश्वर की ओर से आ उपस्थित हुआ जिस का नाम यूहन्ना था।
7 यह गवाही देने आया, कि ज्योति की गवाही दे, ताकि सब उसके द्वारा विश्वास लाएं।
8 वह आप तो वह ज्योति न था, परन्तु उस ज्योति की गवाही देने के लिये आया था।
9 सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है, जगत में आनेवाली थी।
10 वह जगत में था, और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, और जगत ने उसे नहीं पहिचाना।
11 वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया।
12 परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।
13 वे न तो लोहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।
14 और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उस की ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।

2. भजन संहिता 119 : 89-93, 99-103, 127-130

- 89 हे यहोवा, तेरा वचन, आकाश में सदा तक स्थिर रहता है।
90 तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है; तू ने पृथ्वी को स्थिर किया, इसलिये वह बनी है।
91 वे आज के दिन तक तेरे नियमों के अनुसार ठहरे हैं; क्योंकि सारी सृष्टि तेरे आधीन है।
92 यदि मैं तेरी व्यवस्था से सुखी न होता, तो मैं दुःख के समय नाश हो जाता।
93 मैं तेरे उपदेशों को कभी न भूलूंगा; क्योंकि उन्हीं के द्वारा तू ने मुझे जिलाया है।
99 मैं अपने सब शिक्षकों से भी अधिक समझ रखता हूं, क्योंकि मेरा ध्यान तेरी चितौनियों पर लगा है।
100 मैं पुरनियों से भी समझदार हूं, क्योंकि मैं तेरे उपदेशों को पकड़े हुए हूं।
101 मैं ने अपने पांवों को हर एक बुरे रास्ते से रोक रखा है, जिस से मैं तेरे वचन के अनुसार चलूं।
102 मैं तेरे नियमों से नहीं हटा, क्योंकि तू ही ने मुझे शिक्षा दी है।
103 तेरे वचन मुझ को कैसे मीठे लगते हैं, वे मेरे मुंह में मधु से भी मीठे हैं!
127 इस कारण मैं तेरी आज्ञाओं को सोने से वरन कुन्दन से भी अधिक प्रिय मानता हूं।
128 इसी कारण मैं तेरे सब उपदेशों को सब विषयों में ठीक जानता हूं; और सब मिथ्या मार्गों से बैर रखता हूं।
129 तेरी चितौनियां अनूप हैं, इस कारण मैं उन्हें अपने जी से पकड़े हुए हूं।
130 तेरी बातों के खुलने से प्रकाश होता है; उससे भोले लोग समझ प्राप्त करते हैं।

3. लूका 4 : 14, 15

- 14 फिर यीशु आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ गलील को लौटा, और उस की चर्चा आस पास के सारे देश में फैल गई।
15 और वह उन की आराधनालयों में उपदेश करता रहा, और सब उस की बड़ाई करते थे॥

4. लूका 5 : 1

- 1 जब भीड़ उस पर गिरी पड़ती थी, और परमेश्वर का वचन सुनती थी, और वह गन्नेसरत की झील के किनारे पर खड़ा था, तो ऐसा हुआ।

5. लूका 8 : 4-9, 11-15

- 4 जब बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई, और नगर नगर के लोग उसके पास चले आते थे, तो उस ने दृष्टान्त में कहा।
5 कि एक बोने वाला बीज बोने निकला: बोते हुए कुछ मार्ग के किनारे गिरा, और रौंदा गया, और आकाश के पक्षियों ने उसे चुग लिया।
6 और कुछ चट्टान पर गिरा, और उपजा, परन्तु तरी न मिलने से सूख गया।
7 कुछ झाड़ियों के बीच में गिरा, और झाड़ियों ने साथ साथ बढ़कर उसे दबा लिया।
8 और कुछ अच्छी भूमि पर गिरा, और उगकर सौ गुणा फल लाया: यह कहकर उस ने ऊंचे शब्द से कहा; जिस के सुनने के कान होंवह सुन ले॥
9 उसके चेलों ने उस से पूछा, कि यह दृष्टान्त क्या है? उस ने कहा;
11 दृष्टान्त यह है; बीज तो परमेश्वर का वचन है।
12 मार्ग के किनारे के वे हैं, जिन्होंने सुना; तब शैतान आकर उन के मन में से वचन उठा ले जाता है, कि कहीं ऐसा न हो कि वे विश्वास करके उद्धार पाएं।
13 चट्टान पर के वे हैं, कि जब सुनते हैं, तो आनन्द से वचन को ग्रहण तो करते हैं, परन्तु जड़ न पकड़ने से वे थोड़ी देर तक विश्वास रखते हैं, और परीक्षा के समय बहक जाते हैं।
14 जो झाड़ियों में गिरा, सो वे हैं, जो सुनते हैं, पर होते होते चिन्ता और धन और जीवन के सुख विलास में फंस जाते हैं, और उन का फल नहीं पकता।
15 पर अच्छी भूमि में के वे हैं, जो वचन सुनकर भले और उत्तम मन में सम्भाले रहते हैं, और धीरज से फल लाते हैं॥

6. इब्रानियों 4 : 12

- 12 क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ गांठ, और गूदे गूदे को अलग करके, वार पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है।

7. II तीमुथियुस 3 : 1, 2, 4, 5, 14-17

- 1 पर यह जान रख, कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आएंगे।
2 क्योंकि मनुष्य अपस्वार्थी, लोभी, डींगमार, अभिमानी, निन्दक, माता-पिता की आज्ञा टालने वाले, कृतघ्न, अपवित्र।
4 विश्वासघाती, ढीठ, घमण्डी, और परमेश्वर के नहीं वरन सुखविलास ही के चाहने वाले होंगे।
5 वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उस की शक्ति को न मानेंगे; ऐसों से परे रहना।
14 पर तू इन बातों पर जो तू ने सीखीं हैं और प्रतीति की थी, यह जानकर दृढ़ बना रह; कि तू ने उन्हें किन लोगों से सीखा था
15 और बालकपन से पवित्र शास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिये बुद्धिमान बना सकता है।
16 हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है।
17 ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 513 : 26-27

भगवान वास्तविकता के सभी रूपों को बनाता है। उनके विचार आध्यात्मिक यथार्थ हैं।

2. 525 : 17-24

जॉन के सुसमाचार में, यह घोषित किया गया है कि सभी चीजें परमेश्वर के वचन के माध्यम से बनाई गई थीं, "उस में से कोई भी वस्तु उसके [लोगो या शब्द] बिना उत्पन्न न हुई।" सब कुछ भगवान ने अच्छा या योग्य बनाया। जो कुछ भी वैधता या द्वेषपूर्ण है, उसने नहीं बनाया, - इसलिए यह असत्य है। उत्पत्ति के विज्ञान में हमने पढ़ा कि उसने वह सब कुछ देखा जो उसने बनाया था, "और देखा तो बहुत अच्छा था।"

3. 275 : 10-24

वास्तविकता और उसके विज्ञान में होने के क्रम को समझने के लिए, आपको परमेश्वर को उस सभी के दिव्य सिद्धांत के रूप में फिर से शुरू करना चाहिए जो वास्तव में है। आत्मा, जीवन, सत्य, प्रेम, एक के रूप में गठबंधन, - और भगवान के लिए शास्त्र के नाम हैं। सभी पदार्थ, बुद्धि, ज्ञान, अस्तित्व, अमरता, कारण और प्रभाव ईश्वर के हैं। ये उनकी विशेषताएं हैं, अनंत दिव्य सिद्धांत, प्रेम की शाश्वत अभिव्यक्तियाँ। कोई भी ज्ञान बुद्धिमान नहीं है, लेकिन उसका ज्ञान है; कोई सत्य सत्य नहीं है, कोई प्रेम प्यारा नहीं है, कोई जीवन जीवन नहीं है, लेकिन परमात्मा है; कोई अच्छा नहीं है, लेकिन अच्छा भगवान सबसे अच्छा है।

दिव्य तत्वमीमांसा, जैसा कि आध्यात्मिक समझ से पता चलता है, स्पष्ट रूप से दिखाता है कि सभी मन है, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी, सर्वज्ञ, - अर्थात्, सभी शक्ति, सभी उपस्थिति, सभी विज्ञान। इसलिए सभी वास्तव में मन की अभिव्यक्ति है।

4. 497 : 3 (जैसा)-4

सत्य के अनुयायियों के रूप में, हम बाइबल के प्रेरित वचन को अनन्त जीवन के लिए हमारे पर्याप्त मार्गदर्शक के रूप में लेते हैं।

5. 406 : 1-6

बाइबल में सभी उपचारों का नुस्खा है। "और उस पेड़ के पत्तों से जाति जाति के लोग चंगे होते थे।" पाप और बीमारी दोनों एक ही सिद्धांत द्वारा ठीक किए जाते हैं। वृक्ष मनुष्य के ईश्वरीय सिद्धांत के लिए विशिष्ट है, जो हर आपात स्थिति के बराबर है, पाप, बीमारी और मृत्यु से पूर्ण मुक्ति प्रदान करता है।

6. 480 : 29-6

यदि पाप, बीमारी, और मृत्यु को कुछ भी नहीं समझा जाता, तो वे गायब हो जाते। जैसे सूरज से पहले वाष्प पिघलती है, वैसे ही अच्छाई की वास्तविकता से पहले बुराई गायब हो जाएगी। एक को दूसरे को छिपाना चाहिए। कितना महत्वपूर्ण है, फिर, वास्तविकता के रूप में अच्छा चुनना! मनुष्य ईश्वर, आत्मा, और कुछ नहीं के लिए सहायक है। ईश्वर का होना अनंत, स्वतंत्रता, सद्भाव और असीम आनंद है। "और जहां कहीं प्रभु का आत्मा है वहां स्वतंत्रता है।" योर के द्वीपसमूह की तरह, मनुष्य स्वतंत्र है "पवित्रतम में प्रवेश करने के लिए," - भगवान का क्षेत्र।

7. 207 : 20-29

इसके एक कारण और भी हैं। इसलिए किसी अन्य कारण से कोई प्रभाव नहीं हो सकता है, और औकात में कोई वास्तविकता नहीं हो सकती है जो इस महान और एकमात्र कारण से आगे नहीं बढ़ती है। पाप, बीमारी, बीमारी और मृत्यु विज्ञान के नहीं होने के हैं। वे त्रुटियां हैं, जो सत्य, जीवन या प्रेम की अनुपस्थिति को रोकती हैं।

आध्यात्मिक वास्तविकता सभी चीजों में वैज्ञानिक तथ्य है। मनुष्य और पूरे ब्रह्मांड की कार्रवाई में दोहराया गया आध्यात्मिक तथ्य, सामंजस्यपूर्ण है और सत्य का आदर्श है।

8. 335 : 7 (Spirit)-15

आत्मा, ईश्वर, ने सभी को स्वयं में बनाया है। आत्मा ने कभी सामग्री नहीं बनाई। आत्मा में ऐसा कुछ नहीं है जिससे सामग्री बनाई जा सके, क्योंकि बाइबल घोषित करती है, बिना लोगो के, परमेश्वर का वचन या वचन, “जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई” आत्मा एकमात्र पदार्थ है, अदृश्य और अविभाज्य अनंत भगवान। आध्यात्मिक और शाश्वत चीजें पर्याप्त हैं। चीजें सामग्री और अस्थायी असाध्य हैं।

9. 73 : 26-32

यह मान लेना एक गंभीर गलती है कि यह मामला बुद्धिमान अस्तित्व की वास्तविकता का हिस्सा है, या यह कि आत्मा और पदार्थ, बुद्धिमत्ता और गैर-बुद्धिमत्ता, एक साथ कम्यून कर सकते हैं। यह त्रुटि विज्ञान नष्ट कर देगा। कामुक को आध्यात्मिक का मुखपत्र नहीं बनाया जा सकता है, न ही परिमित अनंत का चैनल बन सकता है।

10. 505 : 16-17, 20-28

आत्मा उस समझ को प्रदान करती है जो चेतना को बढ़ाती है और सभी सत्य की ओर ले जाती है। ... आध्यात्मिक भावना आध्यात्मिक अच्छाई की समझ है। समझ वास्तविक और असत्य के बीच सीमांकन की रेखा है। आध्यात्मिक समझ मन, जीवन, सत्य और प्रेम को प्रकट करती है, — और क्रिश्चियन साइंस में ब्रह्मांड का आध्यात्मिक प्रमाण देते हुए, दिव्य भावना को प्रदर्शित करता है।

यह समझ बौद्धिक नहीं है, विद्वानों की प्राप्ति का परिणाम नहीं है; यह प्रकाश में लाई गई सभी चीजों की वास्तविकता है।

11. 319 : 21-3

बाइबल की मूल भाषा में पढ़ाया जाने वाला दिव्य विज्ञान प्रेरणा के माध्यम से आया है, और जिसे समझने के लिए प्रेरणा की आवश्यकता है। इसलिए बाइबल के आध्यात्मिक अर्थ की गलतफहमी, और कुछ उदाहरणों में अप्रकाशित लेखकों द्वारा शब्द की गलत व्याख्या, जिन्होंने केवल एक प्रेरित शिक्षक द्वारा कही गई बातें लिखी

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

थीं। एक गलत शब्द समझ को बदल देता है और शास्त्र को गलत ठहराता है, उदाहरण के लिए, प्रेम को केवल ईश्वर की विशेषता के रूप में नाम देना; लेकिन हम विशेष और उचित पूंजीकरण के माध्यम से प्यार के इज़हार की बात कर सकते हैं, जिसका अर्थ यह है कि प्रिय शिष्य का उसके एक एपिसोड में क्या मतलब है, जब उसने कहा, "ईश्वर प्रेम है।" इसी तरह हम सत्य की बात और जीवन के जीवन की बात कर सकते हैं, क्योंकि मसीह ने स्पष्ट रूप से घोषित किया, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ।"

12. 272 : 3-16

सत्य को समझने से पहले सच्चाई की आध्यात्मिक समझ हासिल करनी चाहिए। इस भावना को केवल इसलिए आत्मसात किया जाता है क्योंकि हम ईमानदार, निःस्वार्थ, प्यार और नम्र हैं। "ईमानदार और अच्छे दिल" की मिट्टी में बीज बोना चाहिए; इसके अलावा, यह मानव प्रकृति में मूल तत्व को उखाड़ फेंकने के लिए ज्यादा फल नहीं है। ईश ने कहा: "तुम पवित्र शास्त्र नहीं जानते; इस कारण भूल में पड़ गए हो।" शास्त्रों की आध्यात्मिक समझ वैज्ञानिक अर्थ को सामने लाती है, और मार्क की सुसमाचार के अंतिम अध्याय में निर्दिष्ट नई जीभ है।

यीशु के "बोने वाले" के दृष्टांत से पता चलता है कि हमारे गुरु ने उन अधूरेपन को समझने के लिए नहीं लिया था, जो आध्यात्मिक शिक्षाओं को कमज़ोर और स्थूल दिलों को स्वीकार नहीं करते थे।

13. 322 : 3-7

जब एक सामग्री से आध्यात्मिक आधार पर जीवन और बुद्धिमत्ता के दृष्टिकोण को बदलते हैं, हम जीवन की वास्तविकता प्राप्त करेंगे, आत्मा का नियंत्रण और हम अपने ईश्वरीय सिद्धांत में ईसाई धर्म या सत्य का अनुभव करेंगे।

14. 503 : 12-15

ईश्वरीय विज्ञान, ईश्वर का शब्द, त्रुटि पर अंधेरे के लिए कहता है, "ईश्वर सब में है," और हमेशा मौजूद प्रेम का प्रकाश ब्रह्मांड को प्रकाशित करता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वानी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6